अक़वाले इमामे जैनुलआबिदीन (अ०)

- ☐ ख़ुदावन्दे आलम बेकार आदमी को पसन्द नहीं करता।
- ☐ अपने ख़ुदा के अलावा किसी और से उम्मीद न रखो।
- ☐ अपनी औलाद का एहतेराम करो और उनकी अच्छी तरबियत करो।
- ☐ हासिद कभी इज़्ज़त नहीं पाता और कीना रखने वाला अपने ग़ुस्से से मरा करता है।
- ☐ दोस्तों का छूट जाना बेकसी है।
- ☐ जिससे मिलो उसे सलाम करो ताकि ख़ुदावन्दे आलम तुम्हारे अज्र मे इज़ाफ़ा करे।
- ☐ बदबख़्त वह शख़्स है जो तजुर्बे और अक़्ल के फ़ाएदे से महरूम रहे।
- ☐ तुम चाहे जितना ताक़त व क़ुव्वत, माल व दौलत में ज़ियादा हो फिर भी अपने ख़ानदान और क़ौम के मोहताज रहोगे।
- ☐ दुआ से बला व मुसीबत टल जाती है।
- ☐ जब दुनिया वालों की ईद (ईदुलफ़ित्र) आती है तो मोमिनों की ईद (रमज़ानुल मुबारक) चली जाती है।
- ☐ किसी को उस वक़्त तक परहेज़गार न समझा जाएगा जब तक वह शक व शुब्हे वाले कामों से और हराम से न बचेगा।
- ☐ क्या कहना उस शख़्स को जो सामने रहने वाली लज़्ज़तो को छुपी हुई नेमतों के हासिल करने के लिए छोड़ दे।
- ☐ कन्जूस को अपना दोस्त न बनाओ क्योंकि इन्तिहाई ज़रूरत के वक़्त वह तुझे महरूम कर देगा।
- ☐ मोमिन की दुआ इन तीन बातों में किसी एक से ख़ाली नहीं होती, या तो उसकी आख़ेरत के लिए ज़ख़ीरा बन जाती है या दुनिया ही में उसका असर ज़ाहिर होता है या कोई ऐसी मुसीबत जो उस तक पहुँचने वाली होती है उससे महफ़ूज़ हो जाता है।
- ☐ छुप कर सदक़ा देने से ख़ुदावन्दे आलम का ग़ुस्सा ख़त्म हो जाता है।
- ☐ ख़ुदावन्दे आलम उस जवान को पसन्द करता है जो अपने नापसन्दीदा आमाल पर शर्मिन्दा हो और तौबा कर ले।
- ☐ अज़्मत उसी को हासिल है जो लोगों को मिज़ाह (मज़ाक़) का ज़रिया न बनाए, उनको धोका न दे और उनके हाल में कमी न करे।